Indian Journal of Social Sciences and Literature Studies
ISSN 2349-5634 (Print) ISSN 2455-0973 (Online)
Vol. 7, Issue 2, October 2021

हिन्दी सिनेमा के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद

सोमनाथ पंडितराव वांजरवाडे
हिन्दी विभाग,
विवेकानंद महाविद्यालय, औरंगाबाद

कलायें इस मानवी समाज का (दुनिया) का हिस्सा है । कलाओं का अस्तित्व और विकास मानव जीवन का एक विभिन्न अंग रहा है । कलाओं के कॅनवास पर अनेक (६४) कलायें हैं । कला यह मानव के आंतरिक गुण विशेष है जो सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति , मनोरंजन , उपजीविका या अभिव्यक्ति का साधन बनकर सामने आती है । मनुष्य जीवन के उद्‌भव के बाद आदिम अवस्था से इस सफर में अनेक बदलाव आये । आदिमानव मानव बना और के जीवन में निरंतर बदलाव आने लगे । आवश्यकता की पूर्ति और अपने ज्ञान , विवेक के आधार पर यह मनुष्य एक दूसरे का सहारा बनने लगा और समुदाय के रुप में रहने लगा । आवश्यकता खोजों की जड़ होती है । जैसे

' अकेला चला था जानिबे मंजील की ओर
लोग आते गये और कारवाँ बनता गया । '

मनुष्य एक दुसरे के संपर्क में आया और समस्या के समाधान हेतु सोच विचार करने लगा। इस सफर में अनेक कलायें उभरकर सामने आयी। समय के प्रवाह में मानव समुदाय की रहन सहन , खान - पान , तिज - त्यौहार इस के रुप में एक संस्कृति उभरकर आयी। इस मानव जीवन में अनेक चीजे महत्त्वपूर्ण है जिसमे सबसे अहम है - कलायें । यहाँ अन्य कलाओं की अपेक्षा विषयानुरुप कलाओं में सर्वश्रेष्ठ और समाज का आईना कहनेवाली कला है - साहित्य। कलाओं में सबसे प्राचीनतम कला है। इन दो (साहित्य-सिनेमा) मानव समाज का वह अंग है, जो मानव समाज की ही उन पहलुओं को प्रदर्शित करता है जो मानव समाज की देन है । वैसे यह वह कला है जो अभिव्यक्ति का माध्यम भी है और अप्रकाशित और अनभिक्त को अभिव्यक्त भी करता है । साहित्य में हिंदी साहित्य की बात की जाये भारतीय भाषाओं के साहित्य में हिंदी साहित्य का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है। हिंदी साहित्य भारतीय साहित्य की अनुपम निधि मानी जाती है। १००० से लेकर जिस साहित्य की आगाज हुआ तो कलाओं में कोई भी हो सामाजिक समयानुरुप निर्मित होती है। सभी कलाओं में सबसे (साहित्य और सिनेमा) प्राचिनतम कला साहित्य यह मानी जाती है और सिनेमा (फिल्म) आधुनिक युग की नवीनतम विद्‌या मानी जाती है । प्राचीनतम कला साहित्य और नविनतम कला सिनेमा दोनों ही भारतीय समाज के मनोरंजन (कम अधिक मात्रा में) का अविभाज्य घटक रही है ।

साहित्य और सिनेमा अपने अपने आरंभ से ही भारतीय समाज का एक सीमा तक आईना रही है जो सामाजिक गतिविधीयों को रेखांकित करती आयी है । साहित्य एक ऐसी कला है जो सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है । जो किसी भी समाज की आंतरिक अदृश्य भावनाओं और विचारों को मूर्त रुप दे देती है । कलाओं का अपना अलग अलग अस्तित्व होता है । इसका एक दूसरे से सम्पर्क होना और एक दूसरे को प्रभावित करना यह समय की बात होती है । दोनो कलाओं के संबंधों को देखने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है की , सिनेमा मनोरंजन है और साहित्य जनजागृति है । इन दो (सिनेमा और साहित्य) माध्यमों के द्‌वारा सामाजिक स्थितियों और सामाजिक समस्याओं को अभिव्यक्त किया गया है । फिल्म साहित्य का एक अंग है तो साहित्य भी फिल्म का एक अंग है । साहित्य के पास पाठक होता है तो सिनेमा के पास दर्शक होता है । दो - तीन घन्टो की अल्पावधी में सृजनात्मकता के द्‌वारा यथार्थ कल्पना और सामाजिक समस्याओं अभिव्यक्ति होती है ।

इसमे सबसे महत्वपूर्ण चीज है - दर्शक । एक ही समय में सिनेमा लाखो लोग देख सकते हैं और सिनेमा लाखो लोगों को उकसाता है , उत्तेजित करता है । मैं फिल्म को साहित्य का एक अंग मानता हूँ । वह भी (सिनेमा) किसी कहानी पर आधारीत होती है । साहित्य और सिनेमा दो अलग अलग दिशायें है , लेकिन दोनों का पारस्पारिक संबंध बहुत गहरा है । शुरु में जब फिल्में बनना शुरु हुआ तो उनकाआधार ही साहित्यिक दुनिया बनी । या यूँ कहा जा सकता है कि सिनेमा का जन्म ही साहित्य से हुआ है (नाटक) । भारत में बननेवाली पहली फीचर फिल्म दादासाहेब फालके ने बनाई जो भारत के हरिशचंद्र की नाटक ' हरिशचंद्र पर आधारित थी । यूँ कह सकते है कि सिनेमा साहित्य (नाटक) का ही विकसित रुप है , लेकीन एक अलग स्वतंत्र रुप धारण करते हुए सभी जनमानस को सबसे ज्यादा प्रभावित किया है । आधुनिक काल में तो सिनेमा अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम बनकर उभरा है । जिस प्रकार साहित्य समाज का आईना है कम अधिक मात्रा में सिनेमा भी समाज का ही आईना है । साहित्य में गहन मानवीय संवेदनाओं का अभिव्यक्ति होती है । वही सिनेमा मे प्रमुखतः मनोरंजन को दी जाती है । तभी तो सिनेमा को व्यावसायिकता ने स्पर्श किया है और सिनेमा बाजार का अंग बन गया है । खैर साहित्य और सिनेमा इन दो कलाओं का संगम अनेक बार हुआ है । वैसे इस संगम का आगाज़ से ही हुआ है (राजा हरिशचंद्र) नाटक / सिनमा ।

हिंदी साहित्य और सिनेमा के संगम की बात होती है तो सबसे पहले नाम आता है - प्रेमचंद जी का । हिंदी साहित्य मे कथा सम्राट के नाम से जाननेवाले प्रेमचंद जी के साहित्य से प्रेरणा लेकर उनके कृतियों पर अनेक फिल्मे बनी । इसकी शुरुवात १९३३ से ' मिल मजदूर से हुई । मोहन भागनानी के निर्देशन में बनी इस फिल्म मे कहानी मे अनेक बदलाव करते हुए फिल्म बनाई । जिसको देखने के बाद प्रेमचंद ने स्वयं कहा था कि यह प्रेमचंद की हत्या है । १९३४ मे सिनेमा को लेकर प्रेमचंद बहुत ही आशावादी थे । इसी आशावाद को लेकर वह सिनेमा की नगरी मुंबई में आ पहुँचे और पहली सिनेमा (साहित्य कृती पर आधारित) निराश मोहभंग हो गई । इसी निराशा के चलते उन्होंने सुप्रसिध्द लेखक शैलेंद्र कुमार को पत्र लिखकर अपनी निराशा को मोहभंग को उल्लेखित किया था , - " फिल्मी हाल क्या लिखु ? मिल यहाँ पास न हुआ लाहौर में पास हो गया और दिखाया जा रहा है । मैं जिन इरादो से आया था इनमें से एक भी पूरे होते नजर नहीं आ रहे है । ये प्रोड्युसर किस ढंग की कहानियाँ बनाते है , सार है उसका ठीक से जो मर भी नहीं सकते । क्लोरिटी को ये लोग एन्टरटेनमेंट वेल्यू कहते है । अद्‌भुत में ही इनका विश्वास है । राजा-रानी , उनके मंत्रियो के षड़यंत्र , नकली लबाई , धोकेबाजी यही इनके मुख्य साधन है । मैंने सामाजिक कहानियाँ लिखी है जिन्हे शिक्षित समाज भी देखना चाहे लेकिन इनका फिल्म बनाते इन लोगो को संदेह होता हौ कि चले या न चले । "[२]

इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि तत्कालीन समय में सिनेमा के जिस यथार्थ की बात की थी वह आज २१ वीं शताब्दी में भी वह उतना ही प्रासंगिक है । इसका कारण है उस माध्यम पर व्यावासायिकता होती है । मिल को प्रतिबंधित किया गया । इस फिर से नये सिरे से बनाया गया । इस यह कहता भी जिसमें मिलों में काम करनेवाले मजदूरो को जीवन दशाओं को यथार्थवादी ढंगो मे दर्शाया गया था । प्रेमचंद की कहानी पर बननेवाली दूसरी फिल्म १९३४ में 'नवजीवन' बनी । जिसमें कहानी साहित्य की नामामात्र ही रह गयी थी । इसी श्रृंखला में फिल्म 'सेवासदन' 'सेवासदन' उपन्यास पर बनी जो महालक्ष्मी सिमेटोन मे बनया था । जिन पर प्रेमचंद ने कहा था कि यही मेरे इस उपन्यास द्‌वारा समाज का कुछ भी उपकार हो सका तो मैं अपने आप को कृतार्थ मानूगाँ ।[३] लेकीन इसमे भी अनेक बदलाव किये गए । इसी सेवासदन पर तमील में कृष्णस्वामी सुब्रहमण्यम ने १९३८ में निष्ठा के साथ फिल्म बनाई जिसे देखकर वैसी निराशा प्रेमचंद को नही हुई जैसा हिंदी के सिनेमा को देखकर हुई थी । यह फिल्म आलोचनात्मक और व्यावसायिक दोनों दृष्टी से सफल रही थी । इसी बीच मे १९४१ में प्रेमचंद की उर्दु कहानी ' औरत की फितरत अथवा स्त्रियाचरित्र ' पर इस्ट इंडिया कंपनी के शीर्षस्थ निर्देशक अब्दुल रशीद कारदार ' स्वामी ' फिल्म बनाई । बात हिंदी साहित्य की है तो केवल हिंदी साहित्य पर बनी फिल्मो का जिक्र करेंगे ।

प्रेमचंद के देहावसान के ठीक दस वर्ष बाद १९४६ में उनके उपन्यास 'रंगभूमी पर इसी नाम से भवनाना प्रोडक्शन ने बनाई। प्रेमचंद के अब तक के साहित्यिक कृतियो पर बनाई गई फिल्मों में सबसे अच्छी थी। जिसके औद्योगिकरण की समस्या और शोषक शोषितो के बीच के (पूंजीपतियों और मजदूरो) संघर्ष को दर्शाया है।

इसी परंपरा मे अगले कई लंबे अंतराल के बाद आयी । प्रेमचंद की सुप्रसिध्द कहानी 'दो बैलो की कथा निर्देशक कृष्ण चोपडा ने ' हीरा मोती ' नाम से सफल फिल्म १९५६ में बनाई । यह फिल्म रंगभूमि से भी सफल बन गई । यह कथा मनुष्य की गुलामी और पशुओं की आजादी पर मार्मिक व्यंग किया गया है । दरअसल यह मुक पशुओं के कहानी देशवासियों को अन्याय के खिलाफ विरोध करने का संदेश देती है ।

प्रेमचंद के कथा साहित्य ही नहीं बल्की हिंदी साहित्य में जिसे मिल का पत्थर कहलाने वाली कृती 'गोदान' जिसे ग्रामीण एवं कृषक जीवन का महाकाव्य पर श्री त्रिलोक जैटली ने सोच समजकर फिल्म बनाई । इस फिल्म की समीक्षा करते हुए श्रीकांत वर्मा ने लिखा था कि, "गोदान का फिल्मांकन वास्तव में प्रेमचंद को एक श्रध्दांजली है । लेकिन यह फिल्म कृति की आत्मा को पकड पाने में सर्वथा असफल रही । यह आश्चर्य की बात नहीं है, यही तो दोनो के बीच का अंतर है ।"

सफल फिल्म हिरामोती के निर्देशक कृष्ण चोपड़ा ने १९६६ मे गवन पर फिल्म बनाकर हिंदी साहित्य प्रेमियो को एक तोहफा दिया । १९७७ मे मृणाल सेन ने प्रेमचंद की प्रसिध्द कहानी 'कफन' पर तेलगु भाषा मे 'ओका ऊरी' नाम से फिल्म बनाई । जिसे तेलगु के सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला । यह बात थोडी सी सोचनीय है। हिंदी साहित्यकार प्रेमचंद जिसकी कृतियों को दूसरी भाषा में ले जाकर फिल्मों में सफलतापूर्वक फिल्मांकन किया जाता है।

इसी कड़ी के अंत मे जिस रचना को लिया है वह समय के अनुसार उसी कड़ी को उपर आती है । लेकिन इसका जिक्र अंत मे इसलिए किया गया है क्योंकि जिस प्रकार हिंदी साहित्य को विश्व में प्रेमचंद के माध्यम से जाना जाता है ठिक उसी तरह भारतीय सिनेमा को विश्व मे सत्यजीत राय के रुप में जाना जाता है । जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय सिनेमा को पहचान दिलायी । प्रेमचंद की छोटीसी कहानी 'शतरंज के खिलाड़ी पर इसी नाम से निर्माता निर्देशक सत्यजीत राय ने फिल्म का निर्माण किया । जिसमें नवाबों की अय्याशी और उसके सामायिक परिवेश को उभारा है । सत्यजीत ने इसमे कुछ बार प्रसंग जैसे जनरल औट्रम प्रसंग लेकर कहानी और फिल्म को ऐतिहासिकता में परिवर्तित कर दिया । वह भी कहानी के आत्मा को सुरक्षित रखते हुए । इस सफल फिल्मांकन पर यही कहा जा सकता है कि , सत्यजीत राय ने प्रेमचंद की कहानी को फिल्म के माध्यम से ऐतिहासिक बना दिया । इस फिल्मको भारत के साथ साथ बर्लिन, लंदन, शिकागो, सिटेल, टोरंटो तथा अन्य देशों के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भी प्रदर्शित किया जा चुका है ।

अंततः कहा जा सकता है कि, दोनो ही कलायें सामाजिक जीवन से उपजी सामाजिक जीवन में पनपी और स्थापित भी हो चुकी है । हर एक कला का अपना एक अलग अस्तित्व होता है । साहित्य यह प्राचीनतम और सामाजिक सरोकारो से पूर्णतः जुडी हुई कला है । तो सिनेमा नवीनतम विधा है जो इसी साहित्य से निर्मित हुई है । लेकिन वह यांत्रिक विधा है । इस सफर में कलाये एक दूसरे को प्रभावित करती है । इन दो विधाओं का संगम अनेक बार हुआ है , लेकिन नतीजा वैसे नही आया है जैसे चाहते थे । सिनेमा इस विधा पर बाजार हावी हो गया है । इसलिए उसमे शुध्द व्यावसायिकता आयी है । साहित्यकार भी इससे प्रभावित हुए है । इसका सबसे बड़ा उदाहरण है चेतन भगत - अंग्रेजी साहित्यकार । उनकी साहित्यिक कृतियों पर फिल्मे बनी है । लेकिन अब तो वह फिल्म को सामने रखकर ही उपन्यास लिख रहा है । 'हाफ गर्लफ्रेंड' यह बात साहित्य के लिए कितनी सही है यह सब सोचनीय है । १९३३ से लेकर अब तक इस सफर में हिंदी साहित्य की अनेक कृतियों पर फिल्मे बनी । जिसमें प्रेमचंद के साहित्य पर तो अनेक बनी किन्तु उसमें उल्लेखनीय फिल्में बहुत ही कम बनी है ।

संदर्भ संकेत :

१. हिंदी साहित्य और सिनेमा - विवेक दुबे

२.सिनेमा और साहित्य - हरीशकुमार

३.प्रेमचंद रचनावली - भाग १६ पृ . क्र . ३९५

४.हिंदी समाचार पत्र - लोकमत समाचार (फिल्म पृष्ठ) पुराने / नये अंक

५. हिंदी समाचार पत्र - दैनिक भास्कर (फिल्म पृष्ठ

६. मूल कहानी / और उपन्यास

७.फिल्मांकित किया उपन्यास